A Comparative study of Banking Working for Regional Rural Bank and Nationalised Bank

(In the context of Distt Raisen of Madhya Pradesh)

* **Shyam Sundar Nema**
Ph.D. Scholar
SSSUTMS, Sehore

** **Dr. Gajraj Singh Ahirwar**
Professor,
SSSUTMS, Sehore

1. प्रस्तावना

बैंक आज हमारी जिंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है, वर्तमान में बैंक हमारे लिये इतने महत्वपूर्ण हो चुके है कि इनके बिना हम अपना वित्तीय प्रबंधन को संभालने की कल्पना भी नहीं कर सकते है। बैंको को सामान्य तौर पर मुद्रा को सहेजने वाली एजेंसियों और उन पर ब्याज देने वाली संस्थाओं के रूप में देखा जाता है, लेकिन वर्तमान में बैंकिग प्रणाली इन सबसे उपर अनेको कार्य का सफलतापूर्वक संपादन कर रही है। भारत में बैकिंग की मूल उत्पत्ति को पुरानी महाजन परम्परा से भी जोड़ कर देखा जा सकता है, जिसमें लोगों को जरूरत के समय मुद्रायें उधार दी जाती थी और वापसी के निष्चित समय सीमा में इसके बदले कुछ अतिरिक्त मुद्रायें अथवा वस्तुयें वसूली जाती थी। मिस्त्र और ऐसी ही दूसरी पुरानी सभ्यताओं के साथ व्यापारिक लेन–देन के दौरान भी ऐसी ही संस्थाओं को उल्लेख मिलता है। आधुनिक बैकिंग प्रणाली जिसे हम वर्तमान में उपयोग कर रहे है, इसका वर्तमान स्वरूप मूल रूप से यूरोपियन्स की ही देन है और आज भी इस प्रणाली में ज्यादातर नये प्रयोग किये जा रहे है। भारतीय आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण क्षेत्रों में साख की मांग की पूर्ति एवं संचय में अभिवृद्धि के दृष्टिकोण से वित्तीय संस्थाओ को इस प्रकार की आर्थिक अन्तरसंरचना प्रदान की गयी है, ताकि वे केवल लाभ कमाने वाली संस्थायें न होकर आर्थिक विकास में सहयोग करने वाली संस्था हो। इस दृष्टि से बैंकों को वर्तमान कार्य प्रणाली तक विकसित किया गया है।

भारत का विकास गांवों के विकास के बिना सम्भव नहीं है, इस बात की पहचान सबसे पहले गॉधी जी ने की और उन्होनें तत्कालीन सरकार को सुझाव दिया कि गांवों का विकास कृषि आधारित कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर किया जा सकता है, क्योंकि देष की कुल जनसंख्या का लगभग 80 प्रतिषत भाग गांवों में निवास करती है। ग्रामीण ऋणग्रस्तता भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये सदैव एक चिन्तन का विषय रहा है। पीढ़ी दर पीढ़ी की ऋणग्रस्तता एवं अपर्याप्त वित्तीय सुविधायें होने के कारण किसान, महाजन एवं साहूकार के जाल से मुक्त नहीं हो पाता और ना ही उसे अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त होता है, षायद इसी आधार पर षाही कृषि आयोग 1930 ने कहा है कि भारतीय किसान ऋण में जन्म लेता है, ऋण में ही पल–पोस कर बड़ा होता है और अपने आश्रितों के लिये भी ऋण छोडकर चला जाता है। बैंको का राष्ट्रीयकरण सामाजिक बैंकिंग की दिषा में एक महत्चपूर्ण पहल थी लेकिन राष्ट्रीयकृत बैंको को भी ग्रामीणोत्रों में ऋण सम्बन्धी जरूरतों को पूरा करने में कोई खास सफलता नहीं मिली क्योंकि भारत में करीब 7 लाख गांवों में राष्ट्रीयकृत बैंको की सुविधा उपलग्ध कराना कोई आसान काम नहीं था, फिर भी व्यावसायिक बैंको का काम करने का भी एक अलग तरीका होता है, वह लाभ को ध्यान में रखे बिना कोई भी कार्य नहीं कर सकते। इसके साथ इन बैंको के सामने सबसे बड़ी परेषानी यह थी कि ग्रामीण जनता इनमें जाने से हिचकते है, दूसरी ओर यह बैंक भी कृषि जैसे मोसमी और अनिष्चत परिणाम वाले कार्यो के लिये किसानों को कर्ज देने में संकोच करते थे। इस प्रकार परम्परागत साख व्यवस्था वर्तमान ग्रामीण परिक्षेत्र के पूर्णतः अनुकूल नहीं थी, फलतः वहां की साख पूर्ति के लिये किये गये प्रयास साख विस्तार की गहनता को प्रभावित नहीं कर पाये। वर्तमान समय में संस्थागत वित्तीय व्यवस्था को प्रभावी, गतिषील, सक्षम एवं उपयुक्त बनाने के लिये नयी–नयी पद्धतियों का विकास किया गया है, जिनके माध्यम से सामाजिक न्याय सहित आर्थिक विकास की संकल्पना को प्रतिमूर्ति का स्वरूप प्रदान किया जा सके। ग्रामीण समाज को साहूकारों के

षिकंजे से मुक्ति दिलाने वाणिज्यिक बैंकों की ग्रामीण षाखाओं की लागत को कम करने, स्थानीय कार्य दषाओं के अनुरूप स्थानीय वर्ग से कार्य लेने तथा ग्रामीण क्षेत्रों की वित्तीय समस्याओं का उपयुक्त एवं प्रभावी ढंग से समाधान करने वं भारतीय अर्थ–तन्त्र की षोषण रहित समाजीकरण की प्रक्रिया में गतिषीलता लाने के लिये क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की भूमिका एक मित्र, मार्ग–दर्षक तथा हितैषी के रूप में महसूस की गयी।

2. ष्षोध षीर्षक

प्रस्तुत षोध अध्ययन हेतु, षोधकर्ता द्वारा जिस षोध समस्या का निर्माण किया गया है, उसका षीर्षक है – क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं राष्ट्रीयकृत बैंको की बैंकिग कार्य–प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन (मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के सन्दर्भ में)।

3. ष्षोध के उद्देष्य

भाटिया एवं भाटिया के अनुसार –''उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो यह नहीं जानता कि उसे कहाँ जाना है? और शिक्षार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर कहीं किनारे पर जा लगेगी।''

प्रस्तुत शोधकार्य निम्न षोध उद्देष्यों के आधार किया गया है–

1. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की कार्य प्रणाली का अध्ययन करना।
2. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंक की कार्य प्रणाली का अध्ययन करना।

4. ष्षोध परिकल्पना

परिकल्पना को शोध का केन्द्र बिन्दु माना जाता है जिसके परितः सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया केन्द्रित होती है।

मैकग्यूगन के अनुसार – "दो या दो से अधिक चरों के बीच के संभावित संबंधों के बारे में बनाये ये जांचनीय कथन को परिकल्पना कहा जाता है।"

प्रस्तुत षोधकार्य हेतु निम्न षून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है –

1. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं राष्ट्रीयकृत बैंक की बैंकिग कार्य प्रणाली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. षोध समष्टि एवं न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में रायसेन जिले में स्थित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको एवं राष्ट्रीयकृत बैकों को चर के रूप में सम्मिलित किया गया है। जिसमें षोध समष्टि के अन्तर्गत मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन में संचालित समस्त राष्ट्रीयकृत बैक षाखाओं एवं जिले में संचालित समस्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में से न्यादर्ष रूप में जिला रायसेन की रायसेन तहसील में स्थापित एवं सेवार्थ राष्ट्रीयकृत बैक षाखाओं तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको को न्यादर्ष हेतु चयनित किया गया है।

6. प्रदत्तों का संकलन

शोधकर्ता द्वारा चयनित बैक षाखा में जाकर वहाँ के षाखा प्रबन्धक की अनुमति से षाखा के पदस्थ कर्मचारियों से सम्पर्क स्थापित कर प्रदत्तों का संकलन किया गया।

सारणी संख्या – 1

मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की बैंकिग कार्य प्रणाली का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्र	विवरण	ड$_1$	ड$_2$	ै$_1$	ै$_2$	क	σक	ब्र
1.	बैंकिग कार्य प्रणाली के प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्ति	2.79	2.89	0.90	0.77	0.10	0.06	1.66
2.	बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति परम्परागत अभिवृत्ति	2.87	2.97	0.93	0.82	0.10	0.07	1.42
3.	बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति	2.90	2.99	0.74	0.89	0.09	0.06	1.50
4.	बैंकिंग नवाचार के प्रति अभिवृत्ति	2.88	2.97	0.80	0.46	0.09	0.07	1.28
5.	बैंकिंग कार्य प्रणाली की समायोजन अभिवृत्ति	2.46	2.60	0.68	0.63	0.14	0.05	2.80

कित्र छ$_1$छ$_2$.2त्र298

7. परिणाम

सारणी संख्या – 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि –

1. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की बैंकिंग कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्ति एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्ति समान हैं।
2. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की बैंकिंग कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति परम्परागत अभिवृत्ति एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति परम्परागत अभिवृत्ति समान हैं।
3. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की बैंकिंग कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति समान हैं।
4. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की बैंकिंग कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति बैंकिंग नवाचार संबंधी अभिवृत्ति एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति बैंकिंग नवाचार अभिवृत्ति समान हैं।
5. मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की बैंकिंग कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विष्लेषण के अन्तर्गत राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति समायोजन अभिवृत्ति, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति समायोजन अभिवृत्ति, से अधिक है।

8. परिकल्पना का परीक्षण

मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों की बैंकिग कार्य प्रणाली के अन्तर्गत बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्ति, परम्परागत अभिवृत्ति, सामाजिक अभिवृत्ति, तथा बैंकिंग नवाचार संबंधी अभिवृत्ति एवं समायोजन अभिवृत्ति, का सांख्यिकीय विष्लेषण किया गया तथा पाया गया कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारियों की बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति व्यक्तिगत अभिवृत्ति, परम्परागत अभिवृत्ति, सामाजिक अभिवृत्ति, तथा बैंकिंग नवाचार संबंधी अभिवृत्ति समान है, जबकि समायोजन अभिवृत्ति, के सांख्यिकीय विष्लेषण में राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारियों की समायोजन अभिवृत्ति, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रति समायोजन अभिवृत्ति, से अधिक पायी गयी। अतः परिकल्पना – मध्य प्रदेष राज्य के जिला रायसेन के क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं राष्ट्रीयकृत बैंक की बैंकिग कार्य प्रणाली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को स्वीकार किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दत्त, रूद्र एवं सुन्दरम् के. पी. एम., "भारतीय अर्थव्यवस्था", एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1998
2. द्विवेदी, राधेष्याम, " मध्य प्रदेष सहकारी कृषि और गामीण विकास बैंक अधिनियम", सुविधा लॉ हाउस, भोपाल, 2004
3. करीम. अब्दुल एवं अन्य, " वित्तीय लेखांकन", साहित्य भवन, पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, प्रायवेट लिमिटेड, आगरा, 2001
4. कुमार, केवल " इन्स्टीट्यूषनल फायनेंस ऑफ इण्डियन एग्रीकल्चर इन विद स्पेषल रिफरेन्स ऑफ कार्मिर्षियल बैंक्स", डीप एण्ड डीप पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 2000
5. माथुर, बी. एस, "स्टडीज इन इण्डियन इन्वायरमेन्ट", आर्य बुक डिपो, नई दिल्लीः 1968.
6. माथुर. बी. एस, " भारत में सहकारिता", साहित्य भवन पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रायवेट लिमिटेड, आगरा, 2000
7. मेराल. गिरीष., " मध्य प्रदेष के ग्रामीण विकास में अग्रणी बैंक योजना के अन्तर्गत बैकों के योगदान का विष्लेषणात्मक अध्ययन", ष्षोध प्रबन्ध, रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय, जबलपुर , 1990 पृष्ठ 646
8. गोविल. एस. पी., " प्रबंधकीय लेखाविधि", साहित्य भवन, आगरा पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर प्रायवेट लिमिटेड, 2007